1/2020 सिद्ध साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियां :—

(1) सिद्ध साहित्य में शास्त्रीय चिन्तन पक्ष गौण है, साधना पर बल दिया गया है।

(2) गुरू के महत्व को स्वीकारा गया है।

3. रूढ़ियों, बाह्याडम्बरों का विरोध किया गया है तथा शास्त्र के प्रति अवहेलना भाव है।

4. सिद्ध साहित्य में रहस्यवादी भावना के साथ-साथ योग साधना पर विशेष बल दिया गया है। ब्रह्माण्ड में जो शिव और शक्ति है सहस्रार और कुण्डलिनी है।

5. वैदिक देवताओं के प्रति अनास्था व्यक्त की गई है।

6. ब्राह्मणवाद के प्रति अपेक्षा एवं वेदों के प्रति असम्मान व्यक्त किया गया है।

7. चमत्कार प्रदर्शन की भावना विद्यमान है।

8. प्रतीकों का प्रयोग करते हुए चमत्कार सृष्टि की गई।

9. सिद्धों की साधना को गुह्य साधना कहा गया है जिसके पीछे उसकी तन्त्रशास्त्र का समावेश हुआ है।

Scanned with CamScanner

10. युक्ति या निर्वाण की तुलना में भी सिद्धियों को प्राप्त (3)
~~प्रतियोग~~ करने पर अधिक बल देते हैं।

11. जाति-पाति के प्रति आक्रोश व्यक्त की गई है तथा पाखंड की निन्दा की गई है।

28/4/2020

सिद्ध साहित्य का महत्व : सिद्धों का बहुत प्रभाव कबीर आदि संत कवियों के काव्य पर दिखाई पड़ता है। संत साहित्य का प्रारम्भिक बीज सिद्धों में ही मिलता है। डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार "सिद्ध साहित्य का महत्व इस बात में बहुत अधिक है कि इससे हमारे साहित्य के आदि रूप की सामग्री प्रामाणिक ढंग से प्राप्त होती है... भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भी भक्तिकाल पर सिद्धों का प्रभाव स्वीकार करते हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सिद्धों की वाणी की यह कहकर आलोचना की कि "वे साम्प्रदायिक शिक्षा मात्र हैं अतः शुद्ध साहित्य की कोटि में नहीं आ सकती" तथापि सिद्ध साहित्य का परवर्ती साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner